Dr. Vandana Suman
Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - IV - MJC - 07
Basic Concepts of Philosophy

"Pramanas"
(प्रमाण विचार)

जिस साधन के द्वारा प्रमाता को प्रमेय का ज्ञान होता है उसे 'प्रमाण' कहते हैं। लौकिक पदार्थों के मान (तौल) का निर्धारण करने के लिए जिस प्रकार तुला (तराजू) की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार न्याय दर्शन में ज्ञान के सत्यासत्य निर्धारण के लिए प्रमाण पदार्थ की आवश्यकता होती है। न्याय दर्शन में इसीलिए प्रमाण की सत्ता सर्वोपरि मानी गयी है और इसी कारण न्याय दर्शन का अपरनाम प्रमाणशास्त्र भी है।

प्रमा के चार प्रभेद हैं: प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शब्द। इन चारों प्रमाओं को उत्पन्न करने में जो सब से अधिक सहायक है उसी को 'प्रमाण' कहते हैं।

चार्वाक से लेकर वेदान्त दर्शनतक प्रमाणों पर अंशरितः से विचार किया गया है। चार्वाक ने केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार किया है। बौद्धों तथा वैशेषिकों ने प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण माने हैं। सांख्य में प्रत्यक्ष अनुमान तथा शब्द को प्रमाण माना गया है। मीमांसा में गुरुमत के प्रतिपादक प्रभाकर मिश्र के मतानुसार पाँच प्रमाण हैं: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द तथा अनुमिति। मीमांसा में कुमारिल भट्ट और

08 THURSDAY 2025 | MAY

वैदान्तियों ने प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान शब्द, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि, इन छह प्रमाणों को स्वीकार किया है।

न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाण तीन प्रकार के माने गये हैं: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

प्रत्यक्ष प्रमाण

जो वस्तु आँखों के सामने विद्यमान है, इन्द्रियाँ जिसको प्रत्यक्ष देख रही है, सामान्यता वही 'प्रत्यक्ष' है। इसलिए इसको निर्विवाद और निरपेक्ष कहा गया है। कहा भी गया है 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं प्रत्यक्षम्।' अर्थात इन्द्रिय और पदार्थ के संयोग (सन्निकर्ष) से उत्पन्न ज्ञान 'प्रत्यक्ष' कहलाता है। इसी को यथार्थ ज्ञान कहा गया है। जैसे- मेरे सामने जो पुस्तक है, मेरी आँखें इसको देख रही है, जिसके पुस्तक होने में मुझे कोई सन्देह नहीं है, वही प्रत्यक्ष ज्ञान, प्रत्यक्ष प्रमाण का विषय है।

प्रत्यक्ष की परिभाषा

में तीन बातों का उल्लेख है: इन्द्रिय, पदार्थ और सन्निकर्ष।

इन्द्रिय इन्द्रियों के प्रमुख दो भेद हैं, कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय। प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए हमें ज्ञानेन्द्रियों की आवश्यकता होती है। ये हैं आँख, जीभ, नाक, त्वचा और कान।

Real change, enduring change, happens one step at a time

उनके द्वारा क्रमशः रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द का ज्ञान होता है।

पदार्थ- इन्द्रिय सम्बन्ध के लिए घट-पटादि वस्तुओं (पदार्थों) का होना आवश्यक है। तभी तो हम किसी वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। न्याय में सात प्रकार के पदार्थ माने गये हैं; जिनके नाम हैं: द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव।

सन्निकर्ष - पदार्थों के साथ इन्द्रियों के सम्बन्ध या संयोग को ही 'सन्निकर्ष' कहते हैं। चक्षु आदि जिन पाँच ज्ञानेन्द्रियों का उल्लेख किया गया है वे विषय तक पहुँचकर उसके रूप का संस्कार लेकर लौट आती हैं। इसी लिए इन्द्रियों को प्राप्यकारी (विषय के संस्कार को ग्रहण करनेवाली) कहा गया है। प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए इन्द्रिय और पदार्थ का होना आवश्यक है। पदार्थों के साथ इन्द्रियों के संयोग को ही 'इन्द्रियार्थसन्निकर्ष' कहा गया है।

सन्निकर्ष के छह भेद हैं: संयोग, संयुक्तसमवाय, संयुक्तसमवेत-समवाय, समवाय, समवेत समवाय और विशेष्यविशेषणभाव।

मन और आत्मा का प्रत्यक्ष - वस्तु के प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए, इन्द्रिय सन्निकर्ष के

अतिरिक्त मन और आत्मा का सान्निकर्ष भी आवश्यक है; क्योंकि इन्द्रिय और विषय का संयोग होने पर कभी-कभी वस्तुओं का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं हो पाता। इन्द्रियों और आत्मा के बीच के क्रिया-व्यापार को जोड़ने के लिए मन एक कड़ी है। विषय के साथ इन्द्रिय का सम्बन्ध, इन्द्रिय के साथ मन का सम्बन्ध और मन के साथ आत्मा का सम्बन्ध होने पर ही प्रत्यक्ष ज्ञान की उपलब्धि होती है। बाहरी विषयों को ग्रहण करके इन्द्रियाँ भीतर पहुँचती हैं और इसके बाद उनको आत्मा तक ले जाने का कार्य करता है मन। इसलिए प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए मन और आत्मा का संयोग भी आवश्यक है।

प्राचीन नैयायिकों और नव्य नैयायिकों ने अनेक तरह से प्रत्यक्ष के भेदों का निरूपण किया है। किन्तु मोटे तौर से प्रत्यक्ष के दो भेद माने जाते हैं जिनके नाम हैं —

1. लौकिक प्रत्यक्ष
2. अलौकिक प्रत्यक्ष

1. लौकिक प्रत्यक्ष —

वस्तु के साथ इन्द्रिय का संयोग ही लौकिक प्रत्यक्ष कहलाता है। यह संयोग दो प्रकार से होता है:

1. पर्वत में आग्नि है : प्रतिज्ञा
2. क्योंकि वहाँ धूम है : हेतु
3. जहाँ-जहाँ धूम होता है वहाँ-वहाँ आग्नि होती है, जैसे रसोईघर : उदाहरण
4. पर्वत में भी उसीप्रकार का धूम है : उपनय।
5. इसलिए पर्वत में भी आग्नि है : निगमन

व्याप्ति का सिद्धान्त

न्याय दर्शन के क्षेत्र में 'व्याप्ति' का बड़ा महत्व माना गया है। दो वस्तुओं के नियत साहचर्य (सर्वदा एक साथ रहने) को ही 'व्याप्ति' कहते हैं। जहाँ दो सहचर वस्तुओं की अनियमित (सर्वदा एक साथ न रहना) हो वहाँ 'व्यभिचार' कहा जाता है। जैसे - धूम और आग्नि का नियत साहचर्य है। किन्तु जल और मछली दोनों वस्तुओं का सहचर - सम्बन्ध होने पर भी दोनों का एक दूसरे के बिना रहना भी पाया जाता है। इसलिए जल और मछली का व्यभिचारित (अनियमित) सम्बन्ध है। किन्तु धूम और अग्नि का अव्यभिचारित (नियत) सम्बन्ध है। इसी नियत - सम्बन्ध को 'व्याप्ति' कहते हैं। इसी के अपर नाम 'सकान्तिकभाव' (एक का दूसरे के आश्रित) तथा 'अविनाभाव' (एक वस्तु का दूसरी वस्तु के

We have to let go of who we think we should be and embrace what is.

'विद्यार्थी के हाथ में पुस्तक है',
यह सविकल्प ज्ञान हुआ। इसी को
'आख्यात' (भाषा के द्वारा अभिव्यक्त)
तथा विशिष्ट ज्ञान भी कहते हैं।

निर्विकल्प प्रत्यक्ष –

निष्प्रकारक ज्ञान को 'निर्विकल्प प्रत्यक्ष'
कहते हैं। 'निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पम्'।
दूसरे शब्दों में केवल वस्तुमात्र के
ज्ञान को 'निर्विकल्प' कहते हैं।
'घट' के साथ 'घटत्व' का ज्ञान
सप्रकारक ज्ञान है; किन्तु केवल
घट मात्र का ज्ञान निर्विकल्प
ज्ञान है। 'विद्यार्थी', 'हाथ' और
'पुस्तक' इस प्रकार विशेषण रहित
वस्तुमात्र का ज्ञान 'निर्विकल्प' है।
इसको अनाख्यात और अविशिष्ट
ज्ञान कहा जाता है।

इस प्रकार 'सविकल्प'
विशिष्ट ज्ञान है और 'निर्विकल्प'
अविशिष्ट ज्ञान। अविशिष्ट
(विशेषण रहित) ज्ञान के बाद ही
सविशिष्ट (विशेषणयुक्त) ज्ञान
की प्राप्ति होती है। इन दोनों
ज्ञानों में वस्तु की आत्मा एक
ही रहता है; किन्तु भेद इतना
ही है कि निर्विकल्प में जहाँ
वह (आत्मा) अनाख्यात
(अव्यक्त) रहता है, सविकल्प

से यहाँ वह आरव्यात (ख्यात) होता है।
अलौकिक प्रत्यक्ष — नव्य नैयायिकों ने अलौकिक प्रत्यक्ष के तीन प्रकार बताये हैं: सामान्य लक्षण, ज्ञानलक्षण और योगज।

1. सामान्य लक्षण — जैसे सामान्य की कहावत है कि मनुष्य मरणशील है। इसका आशय न तो एक मनुष्य से है और न किसी एक व्यक्ति से ही, बल्कि भूत, भविष्य और वर्तमान में जितने भी मनुष्य हैं वे सब मरणशील हैं। यह सम्पूर्ण मनुष्य जाति के लिए है। यह जो एक मनुष्य से सम्पूर्ण मनुष्य जाति का बोध होता है वह अलौकिक प्रत्यक्ष के द्वारा ही संभव है। एक मनुष्य से मनुष्यत्व और मनुष्य-धर्म विशिष्ट सम्पूर्ण मानवता का बोध ही सामान्य-लक्षण प्रत्यक्ष है।

2. ज्ञान लक्षण — एक इन्द्रिय का विषय दूसरी इन्द्रिय द्वारा अनुभव होना ही ज्ञानलक्षण प्रत्यक्ष है। यह अनुभव अतीत ज्ञान के कारण होता है। जैसे- चन्दन के रंग को देखकर हमारे मन में इसके गंध का भी अनुभव होता है। यह अनुभव इसलिए होता है क्योंकि इसको हम पहले देख चुके हैं। कदाचित हम कहते हैं, बर्फ ठंडी दीख रही है,

यहाँ बर्फ का ठंडापन देखने का विषय अर्थात् आँख का विषय नहीं है। बल्कि त्वचा का विषय है। इसप्रकार एक इन्द्रिय के विषय को दूसरी इन्द्रिय के द्वारा अनुभव करना ही 'ज्ञान लक्षण' प्रत्यक्ष है।

(3) योगज— योगाभ्यास द्वारा अलौकिक शक्ति प्राप्त व्यक्तियों को ही 'योगज' प्रत्यक्ष होता है। इस योगज प्रत्यक्ष के द्वारा योगी अतीत-अनागत और समीपस्थ-दूरस्थ वस्तुओं की साक्षात् अनुभूति कर लेता है।